कविता

13

तैयारी भविष्य की

सबा सैफी*

ज्योतिमय, कांतिमय, उज्ज्वल भविष्य के लिए,
चला वह उठा कर बस्ता अपना।
खेत-खलिहान और धूसित राहों से होकर,
निकला वह उठा कर बस्ता अपना॥
मुस्कराता चेहरा लिए, खेलता-कूदता वह,
पहुँचा विद्यालय के समक्ष।
दीवार पर चढ़ कर, कँटीले तारों से होकर,
पहुँचा कक्षा के समक्ष।
सर नंगा था, पैर थे नंगे,
कपड़े के नाम पर, जिस्म पर चिथड़ा था।
गुरु थे, भावी साथी भी थे अंदर,
वह गरीब था, खड़ा था बाहर।
चूल्हे से लाया कोयला,
बनाकर अपना फाउंटेन पेन,
उतार रहा था जो गुरु ने लिखा,
अपने नए लकड़ी के फट्टे पर।
आवाज़ आई, शायद पिता की थी,
समेटा बस्ता और भागा सड़क पर।
आज खेत में बुआई होनी है,
ज्योतिमय, कांतिमय, उज्ज्वल भविष्य की तैयारी,
फिर कल से होनी है।

* *छात्रा* बी.एड, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक